जामताड़ा जिला में जनसंख्या वृ(एवं षिक्षा तथा स्वास्थ्य में इसका प्रभाव

डा0 अषोक कुमार, सहायक प्राध्यापक, भूगोल, विभाग, जामताड़ा
महिला संध्या महाविधालय, जामताड़ा (झारखण्ड)

ABSTRACT

जामताड़ा जिला झारखण्ड राज्य के उत्तर प्रदेष पूरब में स्थित जनजातीय क्षेत्रा है। यह जिला झारखण्ड राज्य का एक पिछड़ा एवं छोटा जिला है। यह 23^0 10′ 24^0 5′ उत्तरी अक्षांष तथा 86^0 30′ 89^0 15′ पूर्वी देषान्तर के बीच पफैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रापफल1802 वर्ग किलोमीटर है। झारखण्ड राज्य के उत्तर पूरब में स्थित जामताड़ा एक ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण जिला है। जिससे जिला मुख्यालय से होकर कई ट्रेनें गुजरती है। 24 अप्रैल 2001ई0 को चार प्रखण्डों एवं मात्रा एक अनुमण्डल को मिलाकर ही जिला मुख्यालय बनाया गया है। यह नगर पष्चिम बंगाल के चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना (ब्ॅ) से 20 किलोमीटर की दूरी पर पष्चिम में स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल आबादी 791042 है जिसमें पुरूशों की संख्या 404830 है तथा महिलाओं की कुल संख्या 386212 है। इस जिले में जनसंख्या की तीव्र वश हुई है।

जनसंख्या की नित्य हो रही वृ(के पफलस्वरूप इस जिले में स्वास्थ्य एवं षिक्षा पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। अप्रत्याषित जनसंख्या की वृ(होने से षहरी क्षेत्रा में भी जनसंख्या का दबाव काफी बढ़ गया है। जिससे स्वास्थ्य का दबाव कापफी बढ़ गया है। जिससे स्वास्थ्य एवं षिक्षा पर प्रभाव पड़ा है।

षोध सार

जनसंख्या में वृ(का स्पश्ट प्रभाव ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्राों पर दृश्टिगोचर होता है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रा की तुलना में नगरीय क्षेत्राों में इसका प्रभाव कुछ भिन्न रूप में दिख पड़ता है। वस्तुतः वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्राों की तुलना में नगरीय क्षेत्राों में आबादी की वृ(अध्कि तीव्र गति से हो रही है तथा इसका प्रभाव भी नगरीय क्षेत्रा के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रा में स्वास्थ्य एवं षिक्षा दोनों पर पड़ा है।

प्रस्तुत षौध पत्रा में झारखण्ड राज्य में जामताड़ा जिला में जनसंख्या वृ(एवं स्वास्थ्य तथा षिक्षा में इसका प्रभाव का अध्ययन करना है। जामताड़ा जिला बनने से पहले एक अनुमण्डल के रूप में जाना जाता था लेकिन 26 अप्रैल 2001 ई0 में जामताड़ा को चार प्रखण्डों–जामताड़ा, नारायणपुर, नाला और कुण्डहित तथा मात्रा एक अनुमण्डल को लेकर ही जिला बनाया गया जिसका जिला मुख्यालय जामताड़ा रखा गया। जिला बनने के बाद यहाँ उत्तरोत्तर विकास होता गया। इसके बाद इस जिला में प्रषासकीय कार्यालय स्थापित हुए एवं सदर अस्पताल का निर्माण हुआ। जिले के गाँव एक दूसरे से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ने लगे। कापफी संख्या में जिला मुख्यालय में आकर बसने लगे जिससे इस जिले की जनसंख्या में वृ(होने लगी तथा षिक्षा एवं स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव पड़ने लगा।

उद्देष्य :–

वर्तमान अध्ययन का उद्देष्य निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित है :–

1. जिले के षहरी क्षेत्राों में जनसंख्या वृ(होने से अनियोजित ढंग से वसाव का होना।
2. जिले में जनसंख्या वृ(के कारण सड़कों पर आवागमन में व्यवधान उत्पन्न होता है। इसका भी अध्ययन इस षोध कार्य में करना है।
3. जिले में जनसंख्या वृ(होने से स्वास्थ्य तथा षिक्षा पर विषेश प्रभाव पड़ा है। इसका भी अध्ययन करना है।

विध्ि तंत्रा :–

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ो पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़ों का संकलन जिले के लोगों से मिलकर प्रष्नावली के आधार पर किया गया तथा द्वितीयक आँकड़ों एवं तथ्यों की जानकारी के लिए पत्रा पत्रिकाओं, षोध ग्रन्थ एवं पुस्तकों का सहयोग लिया गया। इस प्रकार यह षोध पत्रा भ्रमण आँकड़ों का संकलन एवं विभिन्न संदर्भ ग्रंथों पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्रा :–

जामताड़ा जिला झारखण्ड राज्य के उत्तर पूरब में स्थित एक जनजातीय क्षेत्रा है। यह झारखण्ड राज्य का एक पिछड़ा एवं छोटा जिला है जिसका जिला मुख्यालय जामताड़ा है। इसका अक्षांषीय विस्तार 23 डिग्री 10′ उत्तरी अक्षांष से 24 डिग्री 5′ उत्तरी अक्षांष तथा 86 डिग्री 30′ पूर्वी देषान्तर से 87 डिग्री 15′ पूर्वी देषान्तर के बीच पफैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रापफल 1802 वर्ग किलोमीटर है। जामताड़ा जिला के उत्तर में देवघर जिला दक्षिण में ध्नबाद तथा पष्चिम बंगाल हैं। पूरब में चित्तरंजन रेलवे इंजन कारखान जो पष्चिम बंगाल में स्थित है तथा पष्चिम में गिरिडीह जिला स्थित

हैं। जामताड़ा जिला की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 791042 है जिसमें पुरूशों की संख्या 404830 है तथा महिलाओं की कुल संख्या 386212 हैं।

तथ्यों का वर्णन :– जामताड़ा जिला झारखण्ड राज्य के उत्तर पूरब में स्थित एक जनजातीय क्षेत्रा है। यह झारखण्ड राज्य का एक पिछड़ा एवं छोटा जिला है। यह 23 डिग्री 10′ उत्तरी अक्षांष से 24 डिग्री 5′ उत्तरी अक्षांष तथा 86^0 डिग्री 30′ पूर्वी देषान्तर से 87 डिग्री 15′ पूर्वी देषान्तर के बीच पफैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रापफल 1802 वर्ग किलोमीटर है। यह पष्चिम बंगाल के चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना (ब्स्) से 20 किलोमीटर की दूरी पर पष्चिम में अवस्थित है। जामताड़ा तीन नदियों बराकर, अजय तथा षील नदी से घिरा हुआ है। यह एक ऐतिहासिक नगर रहा है। यह हावड़ा पटना मुख्य रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है।

संथाल परगना स्थित जामताड़ा एक पिछड़ा जिला है। इस जिले का जिला मुख्यालय से तीन किलोमीटर की दूरी पर जामताड़ा बाजार है तथा बाजार से सटे एक प्रसि(चंचला मंदिर है जो पूर्व में जय माँ तारा के नाम से जाना जाता था। यहाँ काली पूजा एवं दूर्गा पूजा के समय बलि देने की प्रथा है। यहाँ श्र(ा से लोगों ने मन्नते पूरी होने पर उत्साह से बलि देते हैं। यहा के जिला मुख्यालय से 3–4 कि0मी0 की दूरी पर जामताड़ा महाविधलय जामताड़ा का विषाल प्रांगण है, जहाँ उच्च षिक्षा के लिए दूर–दूर से बच्चे एवं बच्चियाँ षिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। इस महाविद्यालय से डेढ़ किलो0 मीटर की दूरी पर पष्चिम में जामताड़ा महिला संध्या महाविद्यालय है जहाँ उच्च षिक्षा के लिए छात्राओं की भीड़ लगी रहती है।

जामताड़ा की अपनी ऐतिहासिक भूमिका रही है। सैकड़ों वर्श पूर्व जामताड़ा एक धार्मिक स्थल रहा है। इस नगर का नामांकरण के संबंध में यह धारणा है कि पूर्व में अंग्रेजो के षासनकाल में यहाँ प्रसि(मन्दिर जो चंचला मन्दिर, जय माँ तारा के नाम से जाना जाता था। इस प्रसि(मन्दिर को जय माँ तारा जय माँ तारा कहते कहते बाद में लोगों ने इस षहर का नाम जामताड़ा रख दिया।

जामताड़ा का इतिहास गौरवषाली रहा है। देष की स्वतंत्राता में यहाँ के लोगों के योगदान को कम नहीं आँका जा सकता। अतीत के दिनों को याद करे तो संथाल विद्रोह की बात आती है, जब यहाँ के आदिम जनजातियों ने अंग्रेजों से लोहा लिया था। अंग्रेजों को परास्त कर नाकों चने चबाने को विवष कर दिया था। आज भी यह ऐतिहासिक गाथा लोकगीतों में पिरोके गवई गवैये सुनाते हैं तथा नाला प्रखण्ड स्थित मालंचा पहाड़ी उस घटना की गवाही देती है। वह समय संथाल विद्रोह का था। पूरे संथाल परगना में अंग्रेजों के खिलापफ बिगुल पफूँका जा चुका था और जामताड़ा भी इससे अछूता नहीं था। अंग्रेज इसे दबाने के लिए पूरी ताकत को झोंक चुके थे। नाला के मालंचा पहाड़ी के तलहटी में पहाड़िया जनजाति का निवास था। अंग्रेजों के पफुट डालो और राज करो की नीति से अवगत होकर उससे लोहा लेने के लिए सिदो–कान्हू ने सबको एकजूट कर लिया था। विद्रोह में संथालो के अलावे पहाड़िया जनजाति के लोग भी आंदोलन में षामिल थे। अंग्रेजो ने इसे कुचलने के लिए पहाड़ी के उपर गोला–बारूद चढ़ा रखा था।

जब अग्रेंजो और इस जिले के जनजातियों के बीच य(छिड़ा तो अंग्रेज इनके सामने नहीं टिक सके और उन्हें भागना पड़ा। पहाड़ियों के सामने अंग्रेजों के गोला बारूद भी बेकार हो गये। कहते हैं कि अंग्रेजों को परास्त करने में पहाड़ियाओं की अहम भूमिका थी। आज भी पहाड़ियाँ वहाँ उसी पहाड़ी की तलहटी में रहते है। यह बात दिगर है कि आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे कान्हू को अंग्रेज के कुछ दलालों के कारण जान गँवाना पड़ा।

स्वतंत्राता के दिवाने जिन्होने अंग्रेजों से लोहा लिया गंगा सिंह उनमें से एक ऐसे स्वतंत्राता सेनानी है जिन्होने पूरे देष में जामताड़ा का नाम रोषन किए हैं। आजादी के दिवाने गंगा सिंह की कहानी कौन नहीं जानता जिन्होने विदेषी चीजों का विरोध करते हुए 1942 में पहली बार देवघर से गिरफ्तार हुए थे। गंगा सिंह नेताजी सुभाश चन्द्र बोस के अनुयायी थे जिन्हें पुलिस ने कई बार गिरफ्तार भी की लेकिन वे जेल से भी फरार होने में सफलता हासिल कर लिया।

जामताड़ा जिले की जनसंख्या का अधिकांष भाग ग्रामीण क्षेत्रा में निवास करती है। 2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 653081 व्यक्ति थी जो 2011 में बढ़कर 790207 व्यक्ति हो गयी।

जामताड़ा जिले की जनसंख्या वृ(2001 से 2011 के बीच निम्न सारणी से समझा जा सकता हैं :–

	2001	2011
जामताड़ा जिले की लगभग जनसंख्या	6.53 लाख	7.90 लाख
जामताड़ा जिले की वास्तविक जनसंख्या	653081	791042
पुरूशों की संख्या	125056	404830
महिलाओं की संख्या –	115529	386212
वृ(प्रतिषत में	19.85 प्रतिषत	21.12 प्रतिषत
लिंगानुपात प्रति हजार पुरूशेां पर महिलाओं कि संख्या	958	954
साक्षरता ;प्रतिषतद्ध में		64.59
अनुसूचित जाति की संख्या		72885
अनुसूचित जनजाति की संख्या		240489

अगर जामताड़ा जिले में हाल के वर्शो में जनसंख्या पर घ्यान दिया जाय तो यह तथ्य स्पश्ट होता है कि षिक्षा का प्रचार एवं प्रसार तथा चिकित्सा सुविधाओं के विकास के साथ–साथ जामताड़ा जिले के नगरीय क्षेत्राों में जनसंख्या की अप्रत्याषित वृ(हुई है। हाल के दषकों (2001–2011) में जनसंख्या का स्थानान्तरण यहाँ ग्रामीण क्षेत्रा से नगरीय क्षेत्रा की ओर बहुत अध्कि हुआ। लोग ग्रामीण क्षेत्रा से भागकर षहरी क्षेत्रा में अपना आवास बना लिए है।

भारत की योजनाओं में मानव विकास को अत्यन्त आवष्यक उद्देष्य के रूप में स्वीकार किया गया है। देष के दीर्धकालिक विकास एवं उसकी जरूरतों की पूर्ति के लिए मानव विकास आवष्यक होता है। देष में बिकास की दृश्टि से अनेक प्रयत्न किये जा रहे हैं। जिसके पफलस्वरूप कुछ सफलता भी मिली है जो देष में जनसंख्या संबंधित बेहतर सूचकों, साक्षरता में सुधार, स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास, जीवन की औसत आयु में वृ(, जन्म एवं मृत्यु दर में कमी के रूप में प्रतिलक्षित होती है।

जामताड़ा जिले में जनसंख्या वृ(के स्वरूप को सकारात्मक दृश्टिकोण से चिन्हित किया गया है। यह एक जनजाति बहुल आदिवासी क्षेत्रा है जहाँ कि अधिकांष आबादी गरीबी, कुपोशण, अंधविष्वास से परिपूर्ण है और इसका प्रभाव षिक्षा और स्वास्थ्य दोनों पर पड़ा हैं।

आबादी वृ(का षिक्षा पर प्रभाव :–इस षोध् पत्रर में आबादी वृ(से उत्पन्न षिक्षा संबंधी समस्याओं पर भी ध्यान आकृश्ट किया गया है। उल्लेखनीय है कि पहले लोगों में षिक्षा के प्रति झुकाव कम था परन्तु विगत कुछ वर्शो में हर वर्ग, हर समुदाय के लोगों में षिक्षा की ओर आकर्शण बढ़ा हैं। श्रमिक वर्ग भी अपने बच्चों को षैक्षणिक संस्थान में भेजने लगे है क्योंकि अब वे षिक्षा के महत्व से अवगत हो गये है। पेस्टालॉजी के अनुसार मानव की आन्तरिक षक्तियों का स्वभाविक सामंजस्य प्रगतिषील विकास ही षिक्षा है। अतः षिक्षा मानव जीवन, समाज एवं विष्व के प्रति एक नया आयाम प्रदान करती है। जामताड़ा जिले में षिक्षा की स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है, परन्तु वर्तमान समय में इसमें कुछ सुधार होने लगा है। यहाँ साक्षरता एवं षिक्षा का स्तर निम्न है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रा होने के बाद आज भी साक्षरता का स्तर कम है। उनके बीच षिक्षा के प्रचार प्रसार को लेकर सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएँ प्रयासरत है। जिले के ग्रामीण क्षेत्राों में आज भी लोग उच्च षिक्षा से वंचित रह जाते हैं। सम्पन्न किसान, तथा विकसित समुदाय के लोग अपने बच्चों को अन्य जगहों के अच्छे षैक्षणिक संस्थाओं में भेज रहे हैं परन्तु अधिकांष लोग स्थानीय षैक्षणिक संस्थान पर ही निर्भर हैं। जिस गति से जनसंख्या में वृ(हो रही है, षैक्षणिक संस्थान में बढ़ोतारी नही हो रही है। जिले में सरकारी विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की संस्था यथावत बनी हुई है। परन्तु निजी स्कूल एवं कॉलेजों की संख्या में वृ(हुई हैं।

जामताड़ा जिला में निजी विधालयों की संख्या बढ़कर 49 हो गई है तथा महाविधालयों की संख्या 04 हैं। इन विद्यालयों में कुछ विधलय को छोड़कर उपयुक्त गुणवत्ता वाले षैक्षणिक संस्थानों में हमेषा षिक्षकों की कमी रहती है जिससे छात्रा–छात्राओं का पलायन दूसरे क्षेत्राों की ओर हो रहा है। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विशय वार षिक्षकों की संख्या में कापफी कमी हुई है। जिसके कारण छात्रा–छात्राओं को सभी विशयों का समुचित ज्ञान नहीं हो पाता है जिससे विधार्थी षिक्षा का रास्ता छोड़ अनैतिक रास्ते पर चले जाते हैं जिससे सामाजिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो रही है। अतः आवष्यक है कि विधलय तथा महाविधालयों की संख्या में वृ(किया जाय और गुणवता युक्त षिक्षा की व्यवस्था हो जिससे इस जिले के बच्चे सही रास्ते पर विकास की ओर अग्रसर हो क्योंकि षिक्षा के बिना मानव का विकास संभव नहीं हो सकता है इसलिए षैक्षणिक संस्थाओं में वृ(कर इसका समाधान करना एकमात्रा विकल्प है।

जनससंख्या वृ(से स्वास्थ्य पर प्रभाव :– इस षोध् पत्रा में जनसंख्या वृ(से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का ध्यान आकृश्ट कराया गया है। जामताड़ा जिले में जनसंख्या वृ(से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का ध्यान आकृश्ट कराया गया है। जामताड़ा जिले में जनसंख्या वृ(से स्वास्थ्य पर भी काफी प्रभाव पड़ा है क्योंकि जनसंख्या वृ(होने से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेजी से हुआ है। जिसके कारण वातावरण प्रदुशित हो गया है। प्रदुशित वातावरण के कारण लोगों में तरह–तरह की बीमारियाँ पनपने लगी है जिससे लोगों में अस्वस्थता की स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

जामताड़ा जिला में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, रेपफरल अस्पताल तथा जिला स्तर पर अन्य स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास हुआ है। रोग नियंत्राण उपचार तथा परिवार कल्याण पर ध्यान दिया गया है। बहुत सी जानलेवा बीमारी जैसे–हैजा, प्लेग, यक्ष्मा, आदि से हम मुक्ति पा चुके हैं। कुछ दुसरी–दुसरी बीमारियों से बचाव के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। लोगों की स्वास्थ्य स्थिति की जानकारी हमें चिकित्सकों की संख्या में वृ(तथा इसके साधनों में विकास से मिलती है।

जामताड़ा जिला में आबादी वृ(के अनुसार स्वास्थ्य का विकास नही हुआ है। इस जिले में आज भी स्वास्थ्य केन्द्र की कमी है। जिला निम्नलिखित स्वास्थ्य केन्द्र हैं –

जिला अस्पताल (सदर) – 01

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र – 04

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र – 15

स्वास्थ्य उपकेन्द्र – 132

कुष्ठ नियंत्राण इकाई की संख्या – 01

मलेरिया नियंत्राण सोसायटी की संख्या – 01

टीबी नियंत्राण सोसायटी की संख्या – 01

दृश्टिहीनता नियंत्राण सोसायटी की संख्या – 01

इस जिले में आबादी के अनुसार चिकित्सक भी उपलब्ध नहीं है। इस जिले में नर्सो की कापफी कमी है। जिले में नियमित नर्सो की संख्या कम हो गयी है। तथा संविदा आधरित नर्सो की संख्या अध्कि है तथा संविदा कर्मी अपने कामों में हमेषा तत्पर रहते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि देष में षिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्रा में अच्छी प्रगति हुई है लेकिन जनसंख्या वृ(को देखते हुए आज भी सुविधएँ पर्याप्त नहीं है क्योंकि जनसंख्या वृ(को नियंत्रित करने में षिक्षा की भूमिका अहम होती है। विष्व के जिन देषों में षिक्षा ओर स्वास्थ्य का प्रचार प्रसार अध्कि हुआ है वहाँ प्रजनन दर कम होने से जनसंख्या वृ(दर न्यून है।

निश्कर्श :– निश्कर्श के रूप में कहा जा सकता है कि मानव एक विवेकषील प्राणी है और षिक्षा के बिना मानव का विकास नहीं हो सकता है। भारत जैसे विकासषील देषों में जिन राज्यों में साक्षरता का प्रतिषत अध्कि है उन प्रान्तों में जनसंख्या वृ(दर अपेक्षाकृत कम पायी जाती है। जनसंख्या की अनेक समस्याओं से निपटने के लिए

'' जनसंख्या षिक्षा'' जैसे विशय पर बल दिया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति स्वंय के द्वारा उत्पन्न समस्याओं से अवगत होकर उनके घातक परिणामों से अपनी रक्षा कर सकें।

षिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार की तरपफ से तरह–तरह की योजनाएँ इस आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रा में कार्यान्वित की जा रही है जिससे इस जिले में षिक्षा के विकास के साथ–साथ स्वास्थ्य सेवाओं में भी प्रगति का रूख जारी है। पिफर भी इस क्षेत्रा में जितना विकास होना चाहिए वह नहीं हो पाया है।

अतः सरकारी तौर पर षिक्षा के विकास के लिए सही ढंग से षैक्षणिक संस्थान का विकास कर एवं छोटे–छोटे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में वृ(कर गरीब ग्रामीणों की स्थिति में सुधर लायी जा सकती है। इसमें सरकार के साथ–साथ आम नागरिकों में भी जागृति की भावना का होना जरूरी है।

Reference:-

1. संथाल ।ज । ळसंदबम क्पतमबजवतलण
2. झारखण्ड का क्षेत्रीय भूगोल – पेज– 66
3. समाजिक विज्ञान समकालीन भारत – 1